— प्रतं अवलोक —

बी. एस. ब्लूम का शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण (ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक)

(B.S. Bloom's Taxonomy of Educational Objectives) Cognitive, Affective and Psycho-Motor

इस पीडीएफ में आगे ज्ञानात्मक को ही बताया जायेगा —

हर समाज राज्य की अपनी मान्यताएँ, विश्वास, आदर्श, मूल्य इत्यादि होते हैं। वह इनकी पूर्ति के लिए शिक्षा का विधान करता है और उस शिक्षा द्वारा वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहता है। इन उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए जिन विषयों एवं क्रियाओं का प्रशिक्षण आवश्यक समझा जाता है उन्हें पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाता है। समाज व राज्य पाठ्यक्रम के द्वारा निश्चित लक्ष्यों को प्राप्त करवाता है। विद्यालय पाठ्यक्रम में कोई भी विषय स्वयं में साध्य के रूप में स्थान प्राप्त नहीं करता बल्कि पाठ्यक्रम एक साधन है। लक्ष्य एवं उद्देश्य साध्य होता है। अतः पाठ्यक्रम कुछ विशेष लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। हमें यह निर्धारित करना पड़ता है कि बच्चे इससे क्या सीख सकते हैं? और सीखकर अर्थात ज्ञानप्राप्त कर क्या पाना चाहते हैं। इस प्रकार किसी भी कार्य को कोई भी व्यक्ति तभी करता है जब उससे वह कुछ पाना चाहता है। उसी पाने को लक्ष्य व उद्देश्य कहते हैं। इस प्रकार बालक एवं शिक्षक दोनों को स्पष्ट रूप से यह ज्ञात होना चाहिए कि शिक्षा के द्वारा हम किन लक्ष्य व उद्देश्य को प्राप्त करना चाहते हैं। अतः लक्ष्यों व उद्देश्यों के अभाव में शिक्षा व शिक्षण ठीक प्रकार से नहीं चल सकती। इस सम्बन्ध में बी.डी. भाटिया का कथन है कि, "लक्ष्यों के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है जो अपनी मंजिल को नहीं जानता और बालक उस पतवारहीन नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी भी तट पर जा लगेगी।"

"Without the knowledge of aims the educator is like a sailor who does not know his goal or his destination and the child is like rudderless vessel which will be drifted ~~be~~ along somewhere ashore." B.D. Bhatia.

परिभाषा एवं अर्थ :— Meaning and Definition)

उन अभीष्ट व्यवहारगत परिवर्तनों को जिन्हें शिक्षक शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व में लाना चाहता है उसको शिक्षण व शैक्षिक उद्देश्य कहते हैं। ये वे दिशा बिन्दु हैं जिनकी ओर शिक्षण की सम्पूर्ण धारा प्रवाहित होती है। जब तक शैक्षिक उद्देश्य निर्धारित नहीं कर लिए जाते तब तक शिक्षण प्रक्रिया की दिशा ही अनिश्चित होती है। वास्तव में शैक्षिक उद्देश्य तीन प्रकार से शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करती है जैसे —

Scanned with CamScanner

(a) ये शिक्षण प्रक्रिया को दिशा प्रदान करते हैं।
(b) इनके द्वारा शिक्षण-प्रक्रिया क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप से आयोजित करने में सहायता मिलती है।
(c) इनके द्वारा शिक्षण प्रक्रिया के प्रत्येक स्तर पर यह ज्ञात करना सम्भव होता है कि शिक्षार्थी शिक्षण प्रक्रिया से किस सीमा तक लाभान्वित हो रहे हैं।

राबर्ट मेगर ने उद्देश्य के महत्त्व को दर्शाने के लिए एक रोचक उदाहरण प्रस्तुत किया है—

पुरानी कथा है कि एक समुद्री घोड़े को कुछ धन आकस्मिक रूप से प्राप्त हो गया। उस धन को लेकर वह भाग्य की खोज में चल पड़ा। कुछ दूर चलने पर उसे एक मछली मिली और कहने लगी—

— "श्रीमान कहाँ जा रहे हैं?"
— "भाग्य की तलाश में।"
— "बहुत दूर है, यदि आधा धन दो तो तेज गति से चलने वाले 'पर' तुम्हें दे दूँ।"

समुद्री घोड़े ने आधा धन देकर 'पर' ले लिए। आगे चलने पर 'स्पोन्ज' से मुलाकात हुई। उसने भी समुद्री घोड़े को तेज गति से चलने वाली नाव दी तथा शेष धन ले लिया। अब वह चौगुनी रफ्तार से भाग्य की तलाश में चलने लगा।

फिर रास्ते में 'शार्क' मछली मिली, शार्क जानती कि समुद्री घोड़ा भाग्य की तलाश में है, उसने अपना मुँह खोलकर कहा "यदि तुम मेरे मुँह में छलांग लगा दो तो शीघ्र ही भाग्य को प्राप्त कर लोगे" बेचारा समुद्री घोड़ा छलांग लगा कर शार्क के मुँह में चला गया, और वह उसे निगल गई।

उपर्युक्त कथा से यह आशय निकलता है कि व्यक्ति को उसके कार्य का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए नहीं तो भटक कर समाप्त हो जायेगा लक्ष्य को प्राप्त करना तो दूर रहा।

कुछ विद्वानों ने शैक्षिक उद्देश्य की निम्न परिभाषाएँ दी हैं—

(1) बी. एस. ब्लूम के अनुसार "शैक्षिक उद्देश्य वे लक्ष्य हैं जिनकी सहायता से न केवल पाठ्यक्रम की रचना तथा अनुदेशन के लिए निर्देश दिया जाता है अपितु इनसे मूल्यांकन प्रविधियों की रचना एवं प्रयोग के लिए विस्तृत विशिष्टताएँ भी प्राप्त होती हैं।

Scanned with CamScanner

(2) डेविड एच. पयने के अनुसार "शैक्षिक उद्देश्य से तात्पर्य छात्रों में होने वाले उन परिवर्तनों से है जो शैक्षिक क्रियाओं द्वारा नियोजित रूप में लाए जाते हैं। ये परिवर्तन समाज द्वारा निर्धारित प्रतिमानों के प्रतिबिम्ब हैं।

(3) राबर्ट मेगर के अनुसार, "अधिगम अनुभव अर्जित करने के उपरान्त शिक्षार्थी में होने वाले व्यवहारगत परिवर्तनों की पूर्व सूचना, शैक्षिक उद्देश्यों से प्राप्त होती है।

उद्देश्यों का वर्गीकरण (Classification of Objectives)

अध्यापन के समय अध्यापक के द्वारा दिया गया ज्ञान किस स्तर का है इस सम्बन्ध में एक शोध कार्य अमेरिका में किया जा रहा था। इन उद्देश्यों के वर्गीकरण की एक विस्तृत एवं प्रभावशाली योजना शोधकर्ताओं के एक समूह ने जिसके प्रधान वैज्ञानिक ब्लूम (Benjamin Bloom) थे। जिसने 1956 में तैयार किया। इस योजना के अन्तर्गत बालक के मानसिक पक्ष के तीन पक्षों को बताया गया जिसको ब्लूम टेक्सोनामी का शैक्षिक उद्देश्य (Educational Taxonomy objectives of Bloom's) कहते हैं। इन पक्षों में पहला ज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive Domain), दूसरा भावात्मक पक्ष (Affective Domain) और तीसरा है क्रियात्मक पक्ष (Psychomotor Domain) or (Conative) है। ज्ञानात्मक पक्ष का वर्गीकरण बी. एस. ब्लूम ने 1956 में किया, भावात्मक पक्ष का वर्गीकरण ब्लूम, करथवाल (Krathwolt) तथा मसीआ ने 1964 में किया तथा क्रियात्मक पक्ष का सिम्पसन ने 1969 में किया।

(1) ज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive Domain) :-

ज्ञानात्मक पक्ष, ज्ञान तथा सूचनाओं का संग्रह तथा उनके उपयोग से सम्बन्धित है। इस पक्ष में सूचनाओं, तथ्यों तथा ज्ञान की जानकारी सम्मिलित की गयी है। अधिकांशतः शिक्षण द्वारा इसी पक्ष की प्राप्ति की जाती है। ब्लूम ने ज्ञानात्मक पक्ष में प्रत्यास्मरण अथवा ज्ञान को पहचानने और मानसिक योग्यताओं एवं कौशलों के विकास से सम्बन्धित उद्देश्यों को सम्मिलित किया है। इस ज्ञानात्मक पक्ष से सम्बन्धित 6 प्रमुख शिक्षण उद्देश्य है —

Scanned with CamScan

(a) ज्ञान (Knowledge) (b) अवबोध (Understanding)
(c) ज्ञानोपयोग (Application) (d) विश्लेषण (Analysis)
(e) संश्लेषण (Analysis) (f) मूल्यांकन (Evaluation)

(a) ज्ञान (Knowledge) :— इस उद्देश्य के अन्तर्गत शिक्षार्थी विषय से सम्बन्धित तथ्यों, वर्गीकरण करना, विधियों, नियमों, सामान्यीकरण, सिद्धान्तों, धारणाओं आदि घटनाओं, पदों, प्रत्ययों, परम्पराओं, का ज्ञान अर्जित करता है। अतः इस स्तर पर अर्थात् इस उद्देश्य की सम्प्राप्ति पर शिक्षार्थी अर्जित ज्ञान का प्रत्यास्मरण तथा पुनर्पहचान करता है। इसमें स्मरण रखने की योग्यता पर ही विशेष बल दिया जाता है। यह उद्देश्य प्रत्येक विषय के शिक्षण का प्रारम्भिक उद्देश्य होता है।

पाठ्यवस्तु की दृष्टि से ज्ञान वर्ग के तीन स्तर होते हैं —

(1) विशिष्ट बातों का ज्ञान (तथ्य, शब्द आदि)।
(2) विधियों तथा साधनों का ज्ञान।
(3) अमूर्त संकल्पनाओं अर्थात् सामान्यीकरण, नियमों एवं सिद्धान्तों का ज्ञान।

(b) अवबोध (Understanding) :— इस उद्देश्य के अन्तर्गत शिक्षार्थी द्वारा विषय से सम्बन्धित तथ्यों, घटनाओं, पदों, प्रत्ययों, परम्पराओं, निष्कर्षों, सिद्धान्तों, प्राक्कल्पनाओं, समस्याओं, तकनीकी, धारणाओं, उपकरणों, प्रक्रियाओं आदि का अवबोध अर्जित किया जाता है अर्थात् उपर्युक्त ज्ञान स्तर में जितनी बातें हैं उसका समझ विकसित करना, उपर्युक्त ज्ञान स्तर में स्मरण, पहचान आदि के ... काम पर ही विशेष बल दिया जाता है जबकि यहाँ अर्थात् इस उद्देश्य की प्राप्ति पर विद्यार्थी विभेद करता है, विवेचन करता है, तुलना करता है, वर्गीकरण करता है, स्पष्टीकरण करता है, अशुद्धि पहचानता है, अशुद्धि का निवारण करता है, व्याख्या करता है, कारण एवं प्रभाव या कार्य के मध्य सम्बन्ध पहचानता है, चयन करता है, अर्थ ज्ञात करना इत्यादि। अर्थात् इसमें किसी बात को याद ही न रखा जाय बल्कि समझकर आत्मसात कर लिया जाय। अतः स्पष्ट है कि ये क्रियाएं स्मरण से उच्च स्तर की मानसिक योग्यताएँ हैं परन्तु ज्ञान का उद्देश्य प्राप्त किये बिना इस उद्देश्य की प्राप्ति कठिन होती है।

(c) ज्ञानोपयोग या अनुप्रयोग (Application or Application of Knowledge)

इस स्तर पर या उद्देश्य की सम्प्राप्ति पर विद्यार्थी अर्जित उपर्युक्त ज्ञान एवं अवबोध का नवीन परिस्थिति में उपयोग करता है। इसमें अमूर्त संकल्पनाओं मूर्त रूप में प्रयुक्त करने पर बल दिया जाता है। इस उद्देश्य

Scanned with CamScanner

के लिए ज्ञान एवं अवबोध का होना आवश्यक है जिससे छात्र प्रयोग स्तर की क्रियाओं में समर्थ हो सके। यह उपर्युक्त दोनों से उच्च स्तर की है। अर्थात हम किसी भी सिद्धान्त का तभी अनुप्रयोग कर पायेंगे जब हमारे अन्दर ज्ञान एवं बोध दोनों हो चुका होगा। अतः इस स्तर पर जैसे दिये गये तथ्यों, सिद्धान्तों की पर्याप्तता के बारे में निर्णय लेना, तथ्यों में सम्बन्ध स्थापित करना, सुधार किये जाने हेतु नवीन योजना प्रस्तुत करना, किसी समस्या को हल करने हेतु विभिन्न हल प्रस्तुत करना दिये गये तथ्यों, नियमों, साधनों, सिद्धान्तों का सामान्यीकरण करना अर्थात सामान्य सिद्धान्त बनाना। निदान (Diagonosis) अर्थात किसी सिद्धान्त व नियम में कमियों को ढूँढना तथा उसका निदान करना। ज्ञान व अवबोध किये गये पठित शब्दों, नियमों का अपने कथनों में प्रयोग करना इत्यादि।

(4) विश्लेषण -(Anylysis) :- इसके अन्तर्गत किसी ज्ञान, सिद्धान्त, संकल्पना, अवधारणा, सूचना आदि को ठीक ढंग से समझने के लिए उसके निर्माणकारी तत्वों में बाँटा जाता है। इसके लिए उपर्युक्त तीनों स्तर ज्ञान, अवबोध, अनुप्रयोग उद्देश्यों की सम्प्राप्ति आवश्यक है। इसमें सिद्धान्तों, संकल्पनाओं इत्यादि को तीन प्रकार से प्रस्तुत कर सकते हैं —

उसको खण्ड-खण्ड करके समझते हैं।

1. तत्वों का विश्लेषण करना।
2. सम्बन्धों का विश्लेषण करना।
3. व्यवस्थित सिद्धान्तों के रूप में विश्लेषण करना।

उपर्युक्त तीनों स्तर क्रमशः ज्ञान, अवबोध, ज्ञानोपयोग के अपेक्षा विश्लेषण उच्च स्तर का उद्देश्य होता है क्योंकि इसमें पाठ्यवस्तु के तत्वों को अलग-अलग करना तथा उसमें सम्बन्ध स्थापित करना पड़ता है। जैसे एक उदाहरण दिया जाय 'पेन' को 'ज्ञान' स्तर पर जाने कि पेन क्या होता है? अर्थात इससे लिखा जाता है। 'बोध' स्तर पर जाने कि पेन कितने प्रकार का होता है अतः पेन के बारे में सम्पूर्ण समझ विकसित करा लिए, 'अनुप्रयोग' स्तर पर पेन से लिखना जान गये, 'विश्लेषण' स्तर पर पेन के एक-एक पुर्जा के बारे में जान गये कि कैसे यह बना है। एक पुर्जा को समझ लिए तो दूसरे जाति के पेन से तुलना करके यह विश्लेषण हुआ। पेन के जगह कार का उदाहरण भी दे सकते हैं समझने में आसानी होगी इसी तरह कोई सिद्धान्त को जानना है।

कुछ उदाहरण और देखा जाये जैसे कुछ लिखा हुआ है उसमें अनुपयुक्त शब्दों को हटा दे तथा किसी विद्यार्थी को कुछ वस्तुए दी जाय तथा वह इन वर्गों में बाँट कर अलग-अलग टोलियों में रख सके।

Scanned with CamScanner

(E) संश्लेषण (Synthesis) :—

इसमें विभिन्न तत्वों तथा अंगों को एक साथ जोड़कर एक नवीन रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति पर विद्यार्थी अनेक स्रोतों से तत्वों को निकालकर नवीन ढाँचा तैयार करता है अपने ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग, विश्लेषण के आधार पर सृजनात्मक योग्यता का विकास करता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि उसे विषय-वस्तु का पूर्ण ज्ञान हो। इसके अभाव में वह नवीन एवं अनूठी वस्तु का निर्माण नहीं कर सकेगा। उदाहरणार्थ - दिये गये तथ्यों से किसी नवीन सम्प्रेषण को उत्पन्न करना, किसी नवीन कार्य के लिए योजना का निर्माण करना, अमूर्त सम्बन्धों को वर्गीकृत कर नये समूह बनाना। संश्लेषण में हम जोड़कर देखते हैं अर्थात् सम्पूर्ण में देखते हैं यह विश्लेषण का ठीक विपरीत है। संश्लेषण को सृजनात्मक उद्देश्य भी कहते हैं। इसमें छात्रों को अनेक स्रोतों से तत्वों को निकालना होता है। इन विभिन्न तत्वों को मिलाकर नवीन ढाँचा तैयार करना होता है जिससे सृजनात्मक क्षमताओं का विकास होता है। यहां हम एक उदाहरण दे सकते हैं जैसे 'मनुष्य', 'ज्ञान' स्तर में मनुष्य सामान्य तौर पर जाने, पहचाने कि मनुष्य क्या होता है, 'बोध स्तर' पर उसके बारे में हर दृष्टि से सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त किये जैसे मनुष्य के हर एक अंग और किस तरह से पंच भूतों इत्यादि से बना है क्या-२ करता है इत्यादि। अनुप्रयोग स्तर पर मनुष्य को हम देखे कि, मनुष्य क्या-क्या कर सकता है जो करता है, क्या-क्या नहीं कर सकता, शरीर के सम्बन्ध में मनुष्य प्रयोग करके देखा अपने अंगों का विकारों इत्यादि का, 'विश्लेषण स्तर' पर मनुष्य के एक-एक अंग, दर्शन के दृष्टि देखें तो मनुष्य पंचमहाभूतों पंचतन्मात्राओं, इन्द्रियों, मन, बुद्धि अहंकार इत्यादि से बना है। 'संश्लेषण स्तर पर देखें तो मनुष्य के सम्पूर्ण शरीर को देखेंगे एक इकाई के रूप में, जैसे वर्तमान में हम मनुष्य को मानते हैं, 'मैं एक शरीर हूँ' हमेशा हम यह नहीं देखते हैं कि हम आँख, कान, नाक, मांस, विकार, इत्यादि - अलग-अलग हैं। अतः हम सम्पूर्णता में देखते हैं। इसी प्रकार सृजनात्मक दृष्टि से हम मान सकते हैं कि जो ब्रह्माण्ड में है वही शरीर में है अर्थात् उसमें एकता है जीव तथा ब्रह्म एक है, हम सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड हैं।

(F) मूल्यांकन (Evaluation) :—

यह ज्ञानात्मक पक्ष का अन्तिम तथा सबसे उच्च उद्देश्य माना जाता है। इसमें पाठ्य वस्तुओं के नियमों, सिद्धान्तों, तथ्यों इत्यादि के सम्बन्ध में आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाता है। अर्थात् इसमें सिद्धान्त इत्यादि का गुण-दोष के आधार पर मूल्यांकन

Scanned with CamScanner

किया जाता है। इस प्रकार यह कसौटी का स्तर है। उदाहरण के तौर पर किसी विषय, सिद्धान्त, नियम इत्यादि के औचित्य के बारे में निर्णय देना, नवीन समस्याओं के पक्ष या विपक्ष में तर्क प्रस्तुत करना, साक्ष्य के आधार पर मूल्यों का निर्धारण इत्यादि।

आन्तरिक एवं वाह्य